भा॰कृ॰अनु॰प॰ –के.मा.शि.सं, रोहतक केंद्र ने अंतर्देशीय खारेपानी के झींगा फार्मों में उभरती एवं वर्तमान बीमारियों पर जागरूकता कार्यक्रम

भा॰कृ॰अनु॰प॰ –के.मा.शि.सं, रोहतक केंद्र ने दिनांक 10 जून, 2024 को हरियाणा के भिवानी जिले के मेमोरी इन होटल एंड बैंक्वेट में अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) के तहत किसानों के लिए "अंतर्देशीय खारे पानी के झींगा फार्मों में उभरती और वर्तमान बीमारियों" पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में हरियाणा के तीन अलग-अलग जिलों (रोहतक, चरखी दादरी और भिवानी) से अनुसूचित जाति की आबादी से संबंधित साठ उम्मीदवारों ने भाग लिया (52 एम और 8 एफ उम्मीदवार)। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को झींगा पालन में प्रमुख बीमारियों और उनके प्रबंधन उपायों से परिचित कराना था, क्योंकि हरियाणा और पड़ोसी राज्यों के अंतर्देशीय खारे पानी में पी. वन्नामेई की खेती तेजी से बढ़ रही है और इस क्षेत्र के कई खेतों से विभिन्न प्रकार की बीमारियों की घटनाएं सामने आने लगी हैं। कार्यक्रम में केन्द्र के अधिकारी तथा हरियाणा सरकार के मत्स्य विभाग (मत्स्य अधिकारी, भिवानी) के दो अधिकारी भी शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन कार्यक्रम से हुई, जिसमें अंतर्देशीय लवणीय झींगा जलकृषि के संबंध में मत्स्य क्षेत्र में भा॰कृ॰अनु॰प॰ – के.मा.शि.सं, रोहतक केन्द्र की भूमिका तथा उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। उद्घाटन के बाद पाठ्यक्रम निदेशक एवं प्रभारी अधिकारी (डॉ. बबीता रानी ए.एम.) द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा बताई गई, केन्द्र के वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारियों तथा मत्स्य अधिकारियों ने संबोधन किया तथा अंत में एक संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया। जागरूकता कार्यक्रम में अधिकारियों द्वारा झींगा पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि स्टॉकिंग से पूर्व तथा स्टॉकिंग के पश्चात प्रबंधन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, फीड प्रबंधन तथा बेहतर प्रबंधन पद्धतियों पर चर्चा की गई, जिसके बाद अंतर्देशीय लवणीय झींगा पालन में विद्यमान तथा उभरती हुई बीमारियों तथा झींगा पालन की सतत प्रगति के लिए अपनाए जाने वाले विभिन्न प्रबंधन उपायों पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया। केन्द्र ने प्रतिभागियों को आवश्यकता पड़ने पर विभिन्न संस्कृति तथा रोग पहलुओं पर निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों से फीडबैक के साथ हुआ, जिसके बाद समापन समारोह हुआ। कार्यक्रम का समन्वयन **भा॰कृ॰अनु॰प॰ –के.मा.शि.सं,** रोहतक केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. श्रीधरन के. ने किया।